पुरुषोत्तम संगम युग में ईश्वरीय गोद का सुख लो
मनुष्य से देवता बनना तो दैव्य गुण धारण करो
बाप धर्मराज के रूप में है खड़ा
तो बाप का बनने के बाद कोई विकर्म नही करना
चेक करना किसी को दुःख तो नही दिया
चोरी करना, झूठ बोलना यह सब है पाप
सजाओं से बचने का करना पुरुषार्थ
धरत परिये धर्म न छोडिये
माया महावीर रूप बन सामने आये पर
धारणायें न छूटे
सदा श्रेष्ठ स्वमान,श्रेष्ठ स्थिति और समर्थी
जीवन द्वारा श्रेष्ठता का खेल खेलना
कमज़ोरियों का खेल समाप्त करना
सम्पूर्ण अहुति की दृढ़ता से परिवर्तन समारोह मनाओ
रियल डायमंड बन अपनी वायब्रेशनस की चमक फैलाओ

ॐ शांति
मेरा बाबा